Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 29-11-2022, Accepted: 14-12-2022, Published: 31-12-2022
Volume 3, Issue 2, 2022, Page No. 13-15

पाश्चात्य उपन्यास–कला

डॉ० पूनम भारद्वाज
अध्यक्ष, हिंदी–विभाग, आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
प्रारम्भिक काल में नॉवेल के अन्तर्गत सामन्तों, स्त्रियों तथा पादरियों आदि को लक्ष्य बनाकर प्रेम तथा साहसिकता के कारनामों भरी कहानियाँ लिखी जाती थीं। इटली में इन कथाओं की सृजन प्रक्रिया का आरम्भ हुआ। उपन्यास में पहली बार मानव चरित्र के यथार्थ, व्यापक एवं गहन अध्ययन की संभावना देखने को मिली। अंग्रेजी साहित्य में कथा–साहित्य के लिए 'फिक्शन' शब्द का प्रयोग होता है। उपन्यास विशेष रूप से प्रायः मानवीय अनुभव का ही प्रतिनिधित्व करता है। यह यथार्थ अथवा आदर्श रूप में जीवन की व्याख्या करता है। उपन्यास की पूर्णता इस बात में है कि वह परिचित वस्तुओं और दृश्यों का चित्रण इस ढंग से करे कि वे सामान्य हो जायें। उनको पढ़कर पाठक को यथार्थ का भ्रम हो और उसी के रंग में रंग जाये। पाश्चात्य विद्वानों के मत में– उपन्यास मानव–जीवन की व्याख्या करने वाला 'गद्यमय–आख्यान है तथा उपन्यास यथार्थ–जीवन की अभिव्यक्ति है। साहित्य में उपन्यास का वस्तुतः वही स्थान है, जो प्राचीन युग में महाकाव्यों का था। उपन्यास समाज की आलोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार के लिए कहानी साधन मात्र है, साध्य नहीं। उसका उद्देश्य पाठकों का केवल मनोरंजन करना नहीं है। वह सच्चे अर्थ में अपने युग का इतिहासकार है। जो सत्य और कल्पना दोनों का सहारा लेकर व्यापक सामाजिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है।

मूल शब्दः उपन्यास, नॉवेल, अंग्रेजी, जीवन, साहित्य, यूरोप, यूरोपीय, गद्य, सामाजिक, यथार्थ, पाश्चात्य

विश्व साहित्य का प्रारंभ ही कहानियों से हुआ है। प्राचीन काल से लेकर आज तक कहानी ही साहित्य का मेरुदंड रही हैं, लेकिन उपन्यास को आधुनिक युग की देन कहना, अधिक उचित होगा। साहित्य में गद्य के प्रयोग द्वारा जीवन का यथार्थ चित्रण सरलता पूर्वक संभव है। गद्य के माध्यम से लेखक सामान्य बोलचाल की भाषा में अपने भावों को सरलता से व्यक्त कर सकता है। काव्यों में कृत्रिमता और आदर्श देखने को मिलती हैं, लेकिन आधुनिक उपन्यासकार जीवन के यथार्थ को बड़ी कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास, सामाजिक जीवन की व्यापक व्याख्या प्रस्तुत करने के साथ–साथ व्यक्तिगत चरित्र का भी सूक्ष्म अध्ययन करता है। इसमें सामाजिक चेतना का क्रमिक विकास भी देखा जा सकता है। इस प्रकार उपन्यास में जीवन का जितना व्यापक एवं सर्वांगीण चित्रण मिलता है उतना साहित्य के अन्य किसी भी रूप में उपलब्ध नहीं है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ ही उपन्यास का आरंभ और विकास हुआ। जहाँ विज्ञान ने व्यक्ति तथा समाज को सामान्य धरातल से देखने की प्रेरणा दी, वहीं दूसरी ओर उसने जीवन की समस्याओं के प्रति नए दृष्टिकोण भी प्रदान किए। ये दृष्टिकोण मुख्यतः बौद्धिक थे। अब उपन्यासकार के ऊपर कुछ नए उत्तरदायित्व आ गए। अब उसे जागरूक रहना अनिवार्य था। उपन्यास में पहली बार मानव चरित्र के व्यापक एवं गहन अध्ययन की संभावना देखने को मिली।

जब तक यूरोप में धार्मिकता का बोलबाला रहा, तब तक यूरोपीय साहित्य में उपन्यास जैसी विधा के लिए कोई अवसर नहीं था। औद्योगिक सभ्यता के आविर्भाव के साथ–साथ जैसे ही व्यक्ति के मौलिक विचारों को महत्व दिया गया, उसी समय उपन्यास रूपी महावृक्ष का बीजारोपण हो गया। उपन्यास के आविर्भाव के मूल में परम्परावादी विचारों के महत्त्व का त्याग तथा नवीन प्रगतिवादी विचारों का अस्तित्व में आना ही मुख्य कारण है। अंग्रेजी के महान् उपन्यासकार हेनरी फ़ील्डिंग ने अपनी गद्य में लिखी गई रचनाओं को व्यंग्यात्मक महाकाव्य की संज्ञा दी। उन्होंने उपन्यास की अपेक्षा इसे अधिक महत्वपूर्ण बताया।

अंग्रेजी के 'नॉवेल' शब्द के मूल में लैटिन भाषा के 'नॉवेला' तथा 'नॉवेलस' शब्द हैं। यूरोप की अन्य भाषाओं में फ्रेंच भाषा के 'नॉवले' तथा 'नोवस' शब्दों का विकास इन्हीं से हुआ है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से 'नॉवेल' शब्द का प्रयोग आधुनिक अर्थ में सर्वप्रथम सन् 1460 में किया गया था। गद्यात्मक कथा–कृति के अर्थ में 'नॉवेल' शब्द का प्रयोग सन् 1566 से अंग्रेजी भाषा में किया जाने लगा। गोपाल राय के अनुसार उसे "उर्दू में 'नाविल', मराठी में 'कादम्बरी' तथा गुजराती में 'नवल कथा' की संज्ञा प्राप्त हुई है।"[1] अंग्रेजी शब्द 'नॉवेल' इटालियन शब्द 'नॉवेला' से सम्बन्धित है। जिसका अर्थ 'समाचार' से मिलता–जुलता है। 'नॉवेल' शब्द जिस रूप में आज हमारे सामने हैं उसकी प्रकृति को देखते हुए उपन्यास–'समाचार' शब्द के मुख्य अर्थ और सांकेतिक–अर्थ के गुणों की पुष्टि करता है और हमें निर्देश देता है कि नॉवेल' में जीवन से चरित्र–प्रधान घटनाएं चुनी जायें और प्रचलित भाषा का प्रयोग किया जाये। हिंदी साहित्य में उपन्यास शब्द के प्रथम प्रयोग के संदर्भ में गोपाल राय लिखते हैं कि– "हिन्दी में नॉवेल के अर्थ में उपन्यास पद का प्रथम प्रयोग 1875 ई. में हुआ।"[2] 'नॉवेल' के लिए फ्रेंच में 'रोमान' शब्द का प्रयोग किया जाता है। फ्रेंच भाषा का 'रोमान' शब्द 'रोमांस' के अर्थ में प्रचलित था। अब हम इसे नयी गद्यमय रचना के रूप में देखते हैं। यह एक ऐसी रचना है जो किसी नायक के निकटवर्ती रचे गये साहसिक या प्रेम प्रसंग को कथा का रूप दे देती है। जिसे बँगला और हिंदी में उपन्यास कहा जाता है। आधुनिक उपन्यास, आज भी उपन्यास के इस स्वरुप से भिन्न नहीं हैं।

अंग्रेजी साहित्य में कथा–साहित्य के लिए 'फिक्शन' शब्द का प्रयोग होता है। अर्नेस्ट ए० बेकर ने कहा है, "नॉवेल, रोमांस वर्णनात्मक काव्य है और यहाँ तक की नाटक का समावेश भी फिक्शन के अन्तर्गत हो जाता है।[3] इस प्रकार 'नॉवेल' और 'रोमांस' दो अलग–अलग विधाएं हैं। इनके गुणों में भिन्नता है। मानव–जीवन के यथार्थ चित्र को 'नॉवेल' तथा मानव जीवन के अतिरंजित कल्पनात्मक वर्णन को 'रोमांसश कहा जाता है। यद्यपि नॉवेल में माया–जीवन का यथार्थ चित्र होता है किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि नॉवेल में कल्पना का कोई स्थान नहीं है। नॉवेल में भी कल्पना होती है। कभी–कभी रोमांस में जीवन का वह चित्र उपस्थित किया जाता है, जो न कभी हुआ हो और न होने की सम्भावना हो। दि एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिया के अनुसार– नॉवेल एक श्रृंखलाबद्ध कहानी है। जो कहानी वास्तव में ऐतिहासिक रूप से सत्य नहीं हो सकती। दि न्यू पिक्चर्ड एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार नॉवेल, दीर्घ आकार की गद्यमय रचित उस कल्पित कथात्मक रचना को कहा जाता है, जिसमें जीवन के यथार्थ स्वरूप को दर्शाने हेतु कथा तथा पात्र सृजित किये गये हों। राल्फ फाक्स की परिभाषा 'नॉवेल' को महाकाव्य के धरातल पर लाकर खड़ी कर देती है। 'उपन्यास जीवन का गद्य है, यह केवल सामान्य गद्य–कथा नहीं, 'उपन्यास' कला का ऐसा पहला रूप है, जो मनुष्यों को पूर्णतया समझाने और अभिव्यक्त करने का प्रयत्न करता है।[4] क्रॉस ने उपन्यास उस गद्य कथा को माना है, जिसमें यथार्थ जीवन को यथार्थवादी दृष्टिकोण से अभिव्यक्ति दी गयी हो।[5] रिवर्ड चर्च ने 'उपन्यास' को लेखक के व्यक्तित्व का पुष्प माना है।[6] हक्सले का मत है "उपन्यास वासनायुक्त प्रेम, लोभ, भय, महत्त्वाकांक्षा, कर्तव्य और ममता से सम्बन्धित तथ्यों के एक वृत–संग्रह को छोड़कर कुछ नहीं है।"

हेनरी जेम्स के अनुसार– "उपन्यास अपनी व्यापक परिभाषा में जीवन का वैयक्तिक और प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब है।" एच० वी० वेल्स ने "उपन्यास का उद्देश्य केवल मनोरंजन–मात्र ही स्वीकार किया है। आर्नल्ड कैटिल के विचार से "उपन्यास एक ऐसी गद्य–कथा है, जिसका आधार वास्तविक जगत होता है और जो एक प्रकार की सीमितता और पूर्णता से युक्त होता है।"[7] एस० डी० नौल ने कहा है कि गद्य में रचित किसी भी दीर्घकथा को नॉवेल कहा जा सकता है। क्लारारीव के विचार से उपन्यास वस्तुतः यथार्थ जीवन का तथा उस काल का चित्र है, जिसमें वह लिखा गया है। उपन्यास की पूर्णता इस बात में है कि वह परिचित वस्तुओं और दृश्यों का चित्रण इस ढंग से करे कि वे सामान्य हो जायें। उनको पढ़कर पाठक को यथार्थ का भ्रम हो और उसी के रंग में रंग जाये।[8] रोबर्ट लिडेल का कहना है कि उपन्यास में यथार्थ को एक प्रेरणा देने वाले तत्व के रूप में कार्यशील होना चाहिए।[9] हडसन का विचार है कि इस कल्पित कथा का आधार मनुष्य का यथार्थ जीवन ही होता है।[10] शिपले के अनुसार "उपन्यास एक कल्पित कथानक से युक्त दीर्घ–कथा होती है। जिसके पात्रों का चयन यथार्थ जीवन से किया जाता है।"[11] फ्रांसिस बेकन का कहना है कि उपन्यास एक ऐसा चित्र है जो पद्य में नहीं गद्य में छायांकित होता है। हेनरी फोल्डिंग ने उपन्यास को रोचक गद्य–महाकाव्य बताया है। बर्नार्ड डी० थोटो ने कहा है– "उपन्यास अन्य साहित्यांगों की अपेक्षा अधिक परिचित, प्रतिनिधित्व पूर्ण तथा विश्वसनीय माध्यम है।"[12] वाल्टर एलेन का विचार है कि उपन्यास प्रायः लोगों के जीवन के विषय में ही होते हैं।[13] डॉ० हर्बर्ट जे० मूलर का मत है कि उपन्यास विशेष रूप से प्रायः मानवीय अनुभव का ही प्रतिनिधित्व करता है। उपन्यास यथार्थ अथवा आदर्श रूप में जीवन की व्याख्या करता है।

प्रारम्भिक काल में नॉवेल के अन्तर्गत सामन्तों, स्त्रियों तथा पादरियों आदि को लक्ष्य बनाकर प्रेम तथा साहसिकता के कारनामों भरी कहानियाँ लिखी जाती थीं। इटली में इन कथाओं की सृजन प्रक्रिया का आरम्भ हुआ। बाणभट्ट की 'कादम्बरीश को विश्व का प्रथम उपन्यास माना जाता है। कुछ विद्वान 1007 ई. में जापानी भाषा में लिखा गया 'जेन्जी की कहानीश नामक उपन्यास को, दुनिया का सबसे पहला उपन्यास मानते हैं। इसे मुरासाकी शिकिबु नामक महिला ने लिखा था। इसमें 54 अध्याय और लगभग 1000 पृष्ठ हैं। इसमें प्रेम और ज्ञान की खोज में निकले एक राजकुमार की कहानी हहै यूरोप का प्रथम उपन्यास स्पेनी भाषा में, 1605 में, सेर्वेन्टिस द्वारा लिखा गया "डोन क्विक्सोट" माना जाता है। यद्यपि अंग्रेजी के प्रथम उपन्यास के विषय में विद्वानों में मतभेद है। अनेक विद्वान 1678 में जोन बुन्यान द्वारा लिखे गए "द पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस" को पहला अंग्रेजी उपन्यास मानते हैं। इटली के लेखक बौकैसिया ने डीकेमरान की रचना की। सन् 1535 में फ्रेंच लेखक रेबेल का 'गरगन्तुआ' प्रकाशित हुआ। इसके बाद के युग में तेजी से उपन्यास साहित्य की वृद्धि हुई। यूरोप के अनेक लेखकों ने उपन्यास–साहित्य के विकास में योगदान दिया।

"इंग्लैंड में भी सोलहवीं शताब्दी के अंत में उपन्यासों की रचना प्रारम्भ हो चुकी थी। अट्ठारहवीं शताब्दी से पहले सरफिलिफ सिडनी का 'आकेडिया' (1590) और जान बुनियन का पिलग्रिम्य प्रोस (1678–84) उनियल डिपो का 'रॉबिसंन क्रूसो' (1719) और मोल फ्लेडर्स (1722) तथा जानेवन स्विफ्ट 'गुलिवर्स ट्रैवित्स' (1726) प्रकाशित हो चुके थे। जिन्होंने अन्योक्ति विधान द्वारा मानव जीवन के यथार्थों का चित्रण करके आधुनिक उपन्यास के विकास के लिए एक महान परम्परा तैयार कर दी थी।"[14] यूरोप के अनेक लेखकों ने अनेक उपन्यासों की रचना की। सैम्युअल रिचार्डसन तथा हैनरी फोल्डिंग प्रसिद्ध यूरोपीय उपन्यासकार हैं। इंग्लैंड के स्टर्न (ट्रिस्ट्रिम शेराडी), आलिवर गोल्ड स्मिथ (विकास आफ वेक फॉल्ड), जैन आस्टिन (प्राइट एंड प्रेजुडिस), सर वाल्टर स्कौट (वेवलों नॉवेल्स), चार्ल्स डिकेन्स (डेविड–कापर फोल्ड), शार्लट बाराटी (जैन आयर) थैकरे (वेन्टीफेयर) और जार्ज इलियट (एडमवीड) आदि अनेक महान उपन्यासकार हुए हैं। फ्रांस के वाल्टेयर, विक्टर, ह्यूगो, बालजक, स्टेन्दाल, जोला, पलावेयर और अनातोले फ्रांस, जर्मनी में गेटे, रूस में पुश्किन गोगोल, तुर्गनव दस्तावोस्की जैसी महान प्रतिभाओं ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं द्वारा उपन्यास–साहित्य का विकास किया।

इस प्रकार पाश्चात्य विद्वानों के विभिन्न मतों से यह स्पष्ट है कि उपन्यास मानव–जीवन की व्याख्या करने वाला 'गद्यमय–आख्यान है। उपन्यास यथार्थ–जीवन की अभिव्यक्ति है। उपन्यासकार के लिए कहानी साधन मात्र है, साध्य नहीं। उसका उद्देश्य पाठकों का केवल मनोरंजन करना नहीं है। वह सच्चे अर्थ में अपने युग का इतिहासकार है। जो सत्य और कल्पना दोनों का सहारा लेकर व्यापक सामाजिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है। साहित्य में उपन्यास का वस्तुतः वही स्थान है, जो प्राचीन युग में महाकाव्यों का था। उपन्यास समाज की आलोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए यथार्थ अथवा आदर्श रूप में जीवन की व्याख्या करता है। उपन्यास जीवन की सत्य और शाश्वत समस्याओं को उजागर करते हैं तथा उनका समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय (2014). पृ० 13.
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय (2014) पृ० 23.
3. दि हिस्ट्री ऑफ दि इंग्लिश नॉवेल, बोल्युम–1, अर्नेस्ट ए० बेकर, पृ० 12
4. दि नॉवेल एन्ड दि पीपुल राल्फ, फाक्स पृ० 20
5. दि डेवलपमेंट ऑफ इंग्लिश नॉवेल, क्रॉस पृ० 01
6. दि ग्रेथ आफ दि इंग्लिश नॉवेल, रिचर्ड चर्च, पेज 126
7. एन इन्ट्रोडक्शन टू दि इंग्लिश नॉवेल, आर्नल्ड कैटिल, पृ० 28
8. दि प्रोग्रेस ऑफ रोमांस, क्लारारीव पृ० 18
9. ए ट्रीटिज आन दि नॉवेल, रावर्ट लिडेल, पृ० 1
10. एन इन्ट्रोडक्शन टू दि स्टडी ऑफ लिटरेचर, विलियम हेनरी हडसन, पृ० 166
11. दि क्वेस्ट फार लिट्रेचर, शिपले पृ० 354
12. दि वर्ड ऑफ फिक्शन, बर्नार्ड डी० वोटो 50
13. रीडिंग ए नॉवेल–बाल्टर एलेन, पृ० 15
14. आधुनिक हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास, डॉ० बेचौन, पृ० 28